Livewell Hospital, Ahmedabad

दर्द संबंधित
उपयोगी वीडियो के लिए
यू-ट्यूब चेनल देखें

दर्द
एवं
रीढ़ की हड्डी
के लिये

ISO 9001 : 2015 Certified Hospital

दर्द का पूर्ण इलाज

लिववेल®
हॉस्पिटल

5th floor रुद्र आर्केड बी,
हेल्मेट सर्कल, ड्राइव इन रोड,
मेमनगर, अहमदाबाद - ३८००५२

अपॉइन्टमेंट:
98240 90435 I 98250 40252
info@livewellhospital.com
www.livewellhospital.com

Scan for Map

Mediclaim Cashless Facilities Available
मेडिक्लेम केशलेस सुविधा उपलब्ध

लिववेल®
हॉस्पिटल

13TH YEARS SUCCESS in Serving Patients

Livewell Hospital Your Pathway to Pain-Free Living

बीमारियां जिनका हम ईलाज करते हैं

- पीठ दर्द
- गर्दन दर्द
- डिस्क पेन
- साइटिका लेग पेन
- स्लिप डिस्क
- न्यूरोपेथिक पेन
- मायोफेशियल पेन सिंड्रोम
- पोस्ट ऑपरेटिव क्रॉनिक पेन
- रीजनल पेन सिंड्रोम
- ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया
- कैंसर पेन
- मधुमेह सबंधी पैर दर्द
- वर्टीब्रल कम्प्रेशन फ्रैक्चर
- हाथ और पैर में होने वाली झुनझुनी

मिशन

- आधुनिकतम तकनीकों का प्रयोग कर दर्द का कारण खोजना
- स्टेट-ऑफ-द-आर्ट नॉन सर्जिकल (इंटरवेंशनल) पेन मेनेजमेंट तकनीक का उपयोग कर क्रॉनिक पेन का इलाज करना
- पेन-किलर दवाईयों से छुटकारा दिलाना या उन पर निर्भरता कम करना
- क्रॉनिक पेन से पीड़ित मरीज़ को फिर से सामान्य जीवन जीने में मदद करना
- एक स्वस्थ्य और सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देना
- मरीज़ को उचित मूल्य में बेहतर सुविधाएं प्रदान करना

लिववेल हॉस्पिटल अहमदाबाद शहर के मध्य में एक २०११ में स्थापित की गई एक समर्पित, सुविधाजनक जगह पर स्थित है जोकि दर्द के इलाज के लिए सबसे अच्छे संभावित उपाय की पेशकश करती है। यह एक अत्याधुनिक हॉस्पिटल है जिससे सभी प्रोसिजरर्स किये जाते है। हॉस्पिटल उच्च तकनीकवाले ऑपरेशन थियेटर, बेहतरीन इनडोर सुविधा के साथ सुसज्जित है, जिससे सभी प्रोसीजर की देखभाल करना और भी आसान हो जाता है। हॉस्पिटल में स्थापित सभी मशीन, उपकरणों और साधन उच्चतम कक्षा के होने की वजह से सबसे अच्छे परिणाम दिये जा सकते है|

दर्द निवारण के लिए हमारा द्रष्टिकोण

हॉस्पिटल में हम मरीज़ को दर्द से लंबे समय के लिए राहत दिलाने में यकीन रखते हैं। बतौर पेन स्पेशलिस्ट्स हम मूल्यांकन, निदान और लगातार होने वाले दर्द का स्त्रोत जानने और उसकेउपचार में निपुण हैं। हम उन मरीज़ों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करते हैं जो फिजिकल थेरेपी से या फिर प्राइमरी डॉक्टर्स द्वारा दी गई दवाईयों सेठीक नहीं हो पाए हैं। यहाँ पर इंटरवेंशन तकनीक के माध्यम से दर्द से छुटकारा दिलाया जाता है। ये मिनिमली इन्वेसिव प्रोसिजर है जो रेडियोलॉजिकल मार्गदर्शन में संपन्न होती है।

इंटरवेंशनल प्रक्रिया

इंटरवेंशनल पेन मेनेजमेंट यूएसए और यूरोप जैसे विकसित देशों में सफलतापूर्वक चल रहा है।इंटरवेंशनल पेन मैनेजमेंट तकनीक में दर्द से प्रभावित या इसके आसपास के क्षेत्र में दवा सीधी इंजेक्ट की जाती है। इसमें एन्डोस्कोपी ब्लॉक, एन्डोस्कोपी एबलेशन, जोइंट प्रोसिजर्स और रेडियो फ्रीक्वेन्सी प्रोसिजर्स शामिल हैं।इन सभी प्रोसिजर्स में फूलोरोस्कोपिक इमेजिंग का(लाइव एक्स-रे इमेजिंग) प्रयोग होता है। इंन्जेकशन ली जगह को सुन्न करने के लिए लोकल एनेस्थेसिया दिया जाता है। यह सारी प्रक्रिया हमारे हाई टेक ऑपरेशन थिएटर में रेडियोलॉजिकल मशीन की सहायता से की जाती है।

इंटरवेंशनल प्रक्रिया के लाभ

- लगभग दर्दरहित
- मिनिमली इन्वेसिव (केवल सूई पक्चर की जरुरत)
- लोकल एनेस्थेसिया का प्रयोग (चमडी सुन्न करके)
- रेडियोलॉजिकल मार्गदर्शन में संपन्न
- दर्द की जगह पर ही उपचार
- इंटरवेंशन के बाद व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है
- कम लागत
- लंबे समय तक दर्द निवारक दवाईयों का उपयोग करने से निजात
- सर्जरी और इसके दुष्परिणामों से बचाव

Scan for Video

उपचार के विकल्प

- Transforaminal Block
- Facet Joint Block
- Radio-Frequency Nerve Ablation
- Pyriformis Injections
- Percutaneous Adhesionolysis
- DRG Pulsed Radio Frequency
- Spinal Cord Stimulator
- Vertebroplasty - Kyphoplasty
- Trigeminal Ganglion Radio Frequency
- Cancer Pain
- Celiac Plexus Block
- Hypogastric Block
- Ganglion Impar Block
- Intra-Thecal Pump
- Stellate Ganglion Block
- Splanchnic Nerve Block
- Lumbar Sympathetic Block
- Knee Injection
- Endoscopic Disc Removal - Transforaminal
- Spine Surgery

लिववेल हॉस्पिटल में होने वाले उपचार

- कमर दर्द का संपूर्ण इलाज
- रीढ़ की हड्डी का इलाज दूरबीन द्वारा
- कमर में इन्जेक्शन से होने वाले उपचार
- कमर में स्क्रू प्लेट से होने वाले ऑपरेशन
- गर्दन के दर्द का इन्जेक्शन द्वारा इलाज
- गर्दन के दर्द का दूरबीन से उपचार
- गर्दन से खिसकी हुई गद्दी का ऑपरेशन
- घुटनों के दर्द का जेली द्वारा इलाज
- घुटनों को बदलने का ऑपरेशन
- मुँह पर आने वाले करंट के झटकों का रेडियो फ्रीक्वेन्सी द्वारा उपचार

डॉ हितेश पटेल

MD, FIPP

(Fellow of Interventional Pain Practice)USA

दर्द विशेषज्ञ

यू.एस.ए में सफलतापूर्वक कार्य करने के बाद पेन स्पेशलिस्ट डॉ. हितेश पटेल मुंबई के ब्रीच कैंडी व फोर्टिस और कोलकाता के चारनॉक जैसे बड़े हॉस्पिटल्स में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। डॉ. पटेल सभी इंटरवेंशनल पेन मेनेजमेंट तकनीकों में अनुभवी हैं। उन्हें एडवांस्ड तकनीकों जैसे स्पाईन एन्डोस्कोपी रेडियो फ्रीकवेन्सी न्यूरोलिसिस, डायग्नोस्टिक और थेराप्यूटिक सिलेकटिव नर्व रुट, फैसेट ब्लोक, इंट्राडिस्कल प्रोसिजर्स, डिस्कोग्राफी में प्रशिक्षण प्राप्त है। वे इंट्राथीकल ऑपिओइड पम्प् और स्पाइनल कॉर्ड स्टीमुलेटर्स जैसी डिवाइसेज़ के इमप्लान्टेशन में दक्ष हैं।

एक्यूट और क्रॉनिक पेन से पीड़ित मरीजों के लिए पेन हॉस्पिटल किसी वरदान से कम नहीं है। यह इस प्रकार से डिज़ाइन किया गया है कि इसमें रोगियों को हर प्रकार के दर्द से छुटकारा मिल सकता है।

डॉ. हितेश पटेल इंडियन सोसाइटी फॉर स्टडी ऑफ पेन के सक्रिय सदस्य हैं वह अहमदाबाद पेन सोसायटी के सेक्रेटरी है। वह चिकित्सकों व लोगों को सक्रिय रुप से मेडिकल साइयन्स की विशेष ब्रांच एल्गोलॉजी के बारे में जागरुक करते हैं।

Awards & Achievements

Entrepreneur Excellence Award

Business & Service Excellence Award

Indian Achievers Award for Health Care Excellence

FIPP Certificate

Training Certificate

Awards & Achievements

No.1 Center of Pain Management in Gujarat

"Excellence in Pain Management"

Specialist in Ahmedabad

Awards & Achievements

Awarded by Times of India as a

"Times Health Icon Award"

In a single specialty Hospital, in Pain Clinic

Awarded by Times of India as a

Outstanding Contribution

to raise the standard of healthcare in Pain Clinic

सायटिका / स्लिप डिस्क (Sciatica / Slipped Disc)

सायटिका स्लिप डिस्क की वजह से उत्पन्न हुआ एक लक्षण है और उसका दर्द आम तौर पर पीठ, हिप्स और पैर को प्रभावित करता है।

सायटिका के लक्षण

- एक या दोनों पैरों में झुनझुनी और संवेदनशून्यता चींटी चलने जैसी अनुभूति
- पैर में ज्यादा दर्द
- चलने और खड़े होने पर दर्द में वृद्धि
- आराम करने से आंशिक रूप से या पूरी तरह से राहत मिलना

सायटिका की जाँच

सायटिका के कारण का सही निदान होना महत्वपूर्ण है क्योंकि अलग अलग निदान को इलाज के अलग अलग तरीकों की आवश्यकता होगी। और जितनी जल्दी सायटिका का सटीक निदान किया जाता है, उतनी ही जल्दी मरीज को दर्द से राहत पाने के लिए एक उचित इलाज और रोजमर्रा की गतिविधियों का आनंद लेने की क्षमता में सुधार मिल सकता है

जाँच: एक्स-रे, एम.आर.आई. स्केन,
खुन की जाँच

सायटिका के लिए उपचार के विकल्प :

१) दवाएं और व्यायाम : कमर दर्द को शुरु में दवाई और व्यायाम से ठीक करना चाहिए.

अगर उससे आराम नहीं मिलता है तो पेन मेनेजमेंट के माध्यम से इलाज करना चाहिए.

(A) ट्रांसफॉरामिल ब्लॉक:

जब कमर की गद्दी खिसक जाती है तो नस पर दबाव डालती है। उस दबाव की वजह से पेरों में दर्द, झुनझुनी, कमर में दर्द होता है। जब गद्दी नस के उपर दबाव डालती है तो नसों में सुजन आ जाती है। इसी वजह से पैरों में भी दर्द होता है। इस दर्द से राहत पानें के लिए चमडी को सुन्न करके गद्दी और नस के बीच इंजेक्शन दिया जाता है। जिससे नस में सूजन कम होती है और नस फ्री हो जाती है और दर्द से राहत मिलता है।

(B) एन्डोस्कापिक डिस्क निकालना:

एन्डोस्कापिक डिस्क हटाने के लिए हम एंडोस्कोप नामक साधन के माध्यम से उभरी हुई डिस्क के हिस्से को हटा देते हैं| पीठ में छोटी सुई डाली जाती है| त्वचा और उसके नीचे की मांसपेशियों को सुन्न करने के बाद में हम एंडोस्कोप को स्लिप डिस्क के अंदर डालते हैं| हम प्रत्यक्ष द्दष्टि के तहत उभरी हुई गददी को उस स्थान से निकाल देते हैं|

यह एक उत्कृष्ट प्रक्रिया है और हम इस प्रक्रिया के साथ डिस्क(गद्दिका) बहार निकला हुआ एक हिस्सा निकाल सकते हैं। मरीज उसी दिन एक या अगले दिन पर घर जा सकते हैं|

सभी रिपोर्ट की समीक्षा और एमआरआई स्केन के बाद डॉक्टर्स तय कर सकते हैं कि रोगी के लिए कौन सी प्रक्रिया अच्छी है।

एन्डोस्कापिक प्रक्रिया के लिए हम **karl storz, Richrd wolf, Stryker Euro line, Nuavag** जैसे जर्मनी और अमरीकी की कंपनी के सभी उपकरणों का उपयोग करते हैं|

इस प्रक्रिया के लाभ:

- सर्जरी के बिना सायटिका की समस्या से छुटकारा
- डिस्क का बहार निकला हुआ हिस्सा निकालना
- प्रक्रिया स्थानीय बेहोशी के तहत की जाती है
- पूर्ण रूप से बेड रेस्ट की जरूरत नहीं
- कम मात्रा में पोस्ट ऑपरेटिव दर्द
- कम समय मे रिकवरी
- सर्जरी के जैसा परिणाम
- यदि जरूरी हुआ तो डिस्क के नमूने से बायोप्सी करते हैं।
- प्रक्रिया के बाद ज़ख्म का कोई ज्यादा निशान नहीं रहता
- बुजुर्ग मरीजों, मधुमेह व उच्च रक्तचापवाले मरीज पर यह प्रक्रिया की जा सकती है।

(C) ऑपरेशन द्वारा उपचार: कुछ किस्सों में जब गद्दी एवं मणको में ज्यादा समस्या हो तो या फिर मणके टेढ़े मेढ़े हो गये हो तो ऐसे केस में मणकों का ऑपरेशन करने की जरुरत पड़ती है। लिववेल हॉस्पिटल के प्रख्यात स्पाईन सर्जन की टीम द्वारा कमर के मणकों एवं गद्दी का ऑपरेशन किया जाता है। जरुरत पड़ने पर मणकों में स्क्रू प्लेट का ऑपरेशन किया जाता है।

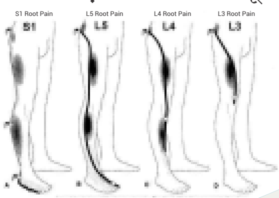

Scan for Video

पीठ / कमर दर्द (Back pain)

दुनिया में १० में से हर ८ लोगों को उनके जीवन समय के दौरान पीठ दर्द के गंभीर हमले से पीड़ित होते हैं। पीठ दर्द एक बीमारी के बजाय लक्षण है। डॉक्टर पीठ दर्द का कारण पता लगाकर उस हिसाब से इलाज करते है।

कमर दर्द के कारण

- बढ़ती उम्र
- जोड़ में समस्या
- स्नायु में चोट
- बार-बार पीठ में चोट
- दोहराया गया तनाव
- मांसपेशियों का निर्बल स्वास्थ्य
- व्यावसायिक ट्रोमा - भार उठाना
- लंबे समय तक कम्प्यूटर पर काम करना

पीठ दर्द के उपचार के क्या विकल्प हैं ?

१) दवाए और व्यायाम : कमर दर्द को शुरु में दवाई और व्यायाम से ठीक करना चाहिए। अगर उससे आराम नहीं मिलता है तो पेन मेनेजमेंट के माध्यम से इलाज करना चाहिए।

(A) फॅसट जॉइंट ब्लॉक

जब पीठ दर्द फॅसट जॉइंटस (जोकि मेरुदण्ड के प्रत्येक तरफ़ स्थित है) से उत्पन्न होता है, एक विशेष प्रकार का इंजेक्शन, जिसे फॅसट जॉइंट इंजेक्शन कहा जाता है, वह हम देते है। यह इंजेक्शन सूजन को कम करने और दर्द से राहत प्रदान करने में मदद कर सकता है। डॉक्टर्स लेप्रोस्कोपी (लाईव एक्स-रे) का उपयोग करके यह सुनिश्चित करते हैं कि दवाई इंजेक्ट करने के पहले सुई को सही ढंग से रखा गया हो। लेप्रोस्कोपी एक विशेष प्रकार का एक्स-रे है जोकि मॉनिटर (टीवी स्क्रीन) पर गतिशील छवियाँ फेंकने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(B) रेडियो फ्रीक्वेन्सी ऐब्लेशन

अगर फॅसट जॉइंट इंजेक्शन सफल रहा है और एक छोटी अवधि के भीतर पीठ दर्द लौट आता है, तो आपको विज्ञान की प्रशाखा से रेडियो फ्रीक्वेन्सी अ1लेशन से लाभ मिल सकता है। लाइव एक्स रे मार्गदर्शन के नीचे हम कमर में रेडियो-फ्रीक्वेन्सी सुई डालते हैं। एक्स-रे मशीन के तहत उचित स्थिति की पुष्टि की जाती है। एक बार जब हम सुई की उचित स्थिति की पुष्टि करते फिर, उसे सुन्न करने के लिए हम रेडियो-फ्रीक्वेन्सी करंट का प्रयोग करते हैं। यह प्रक्रिया केवल जॉइंट और तंत्रिका के संवेदी हिस्से को सुन्न करती है और यह तंत्रिका के किसी भी कार्य को प्रभावित नहीं करती। यह प्रक्रिया एक लंबे समय तक दर्द से राहत द सकती है।

(C) ट्रांसफॉरामिल ब्लॉक:

जब कमर की गद्दी खिसक जाती है तो नस पर दबाव डालती है। उस दबाव की वजह से पेरों में दर्द, झुनझुनी, कमर में दर्द होता है। जब गद्दी नस के उपर दबाव डालती है तो नसों में सुजन आ जाती है। इसी वजह से पैरों में भी दर्द होता है। इस दर्द से राहत पानें के लिए चमडी को सुन्न करके गद्दी और नस के बीच इंजेक्शन दिया जाता है। जिससे नस में सूजन कम होती है और नस फ्री हो जाती है और दर्द से राहत मिलता है।

कमर, मणका एवं गद्दी का ऑपरेशन द्वारा उपचार:

जब कमर की गद्दी में दर्द बहुत ज्यादा होता है। एवं कमर के मणके टेढ़े-मेढ़े हो जाने के कारण कमर की नस दब जाती है और पेर में झनझनाटी होती है। पेर का भारी होना और पेर सुन्न हो जाते है।

ऐसे केस में कमर के मणकों के ऑपरेशन की जरुरत पड़ती है। लिववेल हॉस्पिटल के प्रख्यात स्पाईन सर्जनो द्वारा कमर के मणको, गर्दन के मणको एवं गद्दी का ऑपरेशन किया जाता है।

लिववेल हॉस्पिटल में मणका, गद्दी के होने वाले ऑपरेशन:

- नस उपर गद्दी का दबाव।
- मणकों के घिसाव का ऑपरेशन
- जन्म से टेढ़े मणको का ऑपरेशन
- खिसके हुए मणको का स्क्रु-प्लेट द्वारा ऑपरेशन
- गर्दन एवं कमर के हर प्रकार का ऑपरेशन

Scan for Video

गर्दन दर्द (सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस) (Neck Pain)

सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस (गर्दन का दर्द) क्या है?

सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस एक उम्र से संबंधित वर्टिब्र और गर्दन की डिस्क का विकार (टूट फूट) है। एक हद तक, जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हम सबकी वर्टिब्र और डिस्क में धीरे-धीरे नुकसान होता हैं।

गर्दन का दर्द / सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस के लक्षण

- गर्दन दर्द
- ज्यादातर सिर के पीछे के हिस्से में कभी-कभार सिर दर्द (पश्चकपाल हिस्सा)
- गर्दन की गतिविधि दर्द को और भी बदतर बना देती है।
- कंधे में दर्द जो अक्सर गर्दन की मांसपेशियों की जकड़न के साथ उभरता है।
- ऊपरी बाहु से कोहनी तक या हाथ की ओर दर्द
- दर्द और अकड़न के साथ जुड़े चक्कर और वर्टिगो।

गर्दन दर्द के उपचार

१) प्रारंभिक उपचार:

आराम, दवाएँ और व्यायाम उपचार के प्रारंभिक रूप हैं।

(A) इंजेक्शन द्वारा (सर्वाईकल इपिडयुरल:)

गर्दन में दर्द ज्यादा एवं हाथ में झनझनाटी ज्यादा हो तो गर्दन की गद्दी एवं नस के बीच इंजेक्शन दिया जाता है। एक्स-रे मशीन में देखकर चमड़ी सुन्न करके खिसकी हुई गद्दी के पास इंजेक्शन दिया जाता है। जिससे नस में सुजन मिट जाती है। एवं दर्द से सम्पूर्ण राहत मिलती है।

(B) रेडियो फ्रीक्वेन्सी अब्लेशन: (Radio Frequency Ablation)

यह एक नई तकनीक है। अगर उपचार के अन्य प्रकार के साथ सर्वाइकल स्पोंडिलोसिस ठीक नहीं हो पाता है, आप वह तंत्रिका की रेडियो फ्रीक्वेन्सी अब्लेशन की सहायता ले सकते है जोकि उस खास जोड़ तक दर्द की अनुभूति लेकर जाती है। लाइव एक्स रे मार्गदर्शन के नीचे हम गर्दन में रेडियो फ्रीक्वेन्सी सुई डालते हैं। एक्स रे मशीन के तहत उचित स्थिति की पुष्टि की जाती है। एक बार जब हम सुई की उचित स्थिति की पुष्टि करले, उसे सुन्न करने के लिए हम रेडियो फ्रीक्वेन्सी करेंट का प्रयोग करते हैं। यह प्रक्रिया केवल जॉइंट और तंत्रिका के संवेदी हिस्से को सुन्न करती है और यह तंत्रिका के किसी भी कार्य को प्रभावित नहीं करती। आम तौर पर दर्द पर रेडियो फ्रीक्वेन्सी का अच्छा प्रभाव होता है।

Scan for Video

हाथ की झनझनाटी:

गर्दन की गद्दी खिसक जाने से हाथ में जाने वाली नसों के उपर दबाव होता है इसलिए हाथ में खाली चढ़ जाती है एवं झनझनाटी होती है।

सर्वाइकल डिस्क के लक्षण:

- कंधो हाथ एवं कोहनी तक के भाग में खाली चढ़ जाना
- हाथो में जलन होना
- हाथ भारी लगना
- हाथ में कमजोरी लगना

जाँच: एक्स-रे एवं एम.आर.आई. से जाँच करके उसके कारण का पता लगाया जाता है।

उपचार:

(1) दवाईयाँ : शुरुआत की तकलीफ में दवाईयों से उपचार किया जाता है।

(2) इंजेक्शन द्वारा सर्वाईकल इपिडयुरल:

गर्दन में दर्द ज्यादा एवं हाथ में झनझनाटी ज्यादा हो तो गर्दन की गद्दी एवं नस के बीच इंजेक्शन दिया जाता है। एक्स-रे मशीन में देखकर चमड़ी सुन्न करके खिसकी हुई गद्दी के पास इंजेक्शन दिया जाता है। जिससे नस में सुजन मिट जाती है। एवं दर्द से सम्पूर्ण राहत मिलती है।

(3) ऑपरेशन द्वारा: जब गर्दन की नस में ज्यादा दबाव हो या फिर गद्दी ज्यादा खिसक गई हो तो ऐसे केस में गर्दन के मणकों का ऑपरेशन किया जाता है। ऐसे केस में गर्दन के मणकों में स्क्रू-प्लेट डालकर ऑपरेशन किया जाता है।

Scan for Video

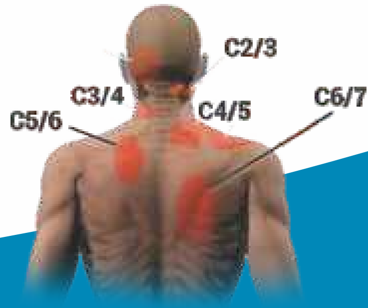

ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया (Trigeminal Neuralgia)

चेहरे की नसों मे दर्द

ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया एक बहुत ही दर्दभरी बीमारी है जो ट्राइजेमिनल नस को प्रभावित करती है। ट्राईजेमिनल न्यूराल्जिया के झटके इतने तेज होते है के कुछ मरीज आत्महत्या करने को प्रेरित होते है। इसलिए इसको आत्मघाती रोग (Suicide Disease) भी कहते है ।

ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया के लक्षण

- चहेरे की एक तरफ करंट के झटके
- चेहरे को छूने से, चबाने पर, बोलने और दांतों की सफाई जैसी बातों से शुरू होने वाले हमले
- कुछ सेकंड से कुछ मिनट चलने वाले दर्द के झटके
- कई दिन, कई सप्ताह तक दर्द चलता है
- गाल, नाक और आँखों के आसपास झटके

ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया का उपचार

आम तौर पर ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया का इलाज दवाओं के साथ शुरू होता है। हालांकि, समय के साथ, इस रोग वाले कुछ लोगो में अंततः दवाओं की असर दिखना बंद हो जाता है या वे साईड इफेक्ट का अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दुसरे उपाय की आवश्यकता है।

ट्राइजेमिनल न्यूरालजिया के लिए सबसे आम प्रारंभिक उपचार है आपके मस्तिष्क को मिलते दर्द के संकेत को कम या ब्लॉक करना।

१. दवाई : ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया के लिए कार्बामाज़ेपाइन (टेग्रेटोल, मेजीटोल) दवा लिखी जाती है। इन दवाई के माध्यम से दर्द को काबू में करने के प्रयास किया जाता है।

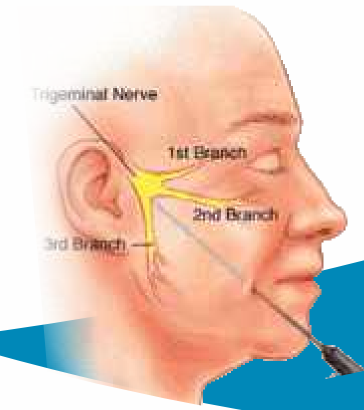

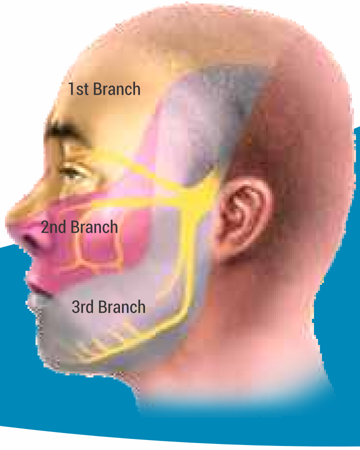

ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया का रेडियो फ्रीक्वेन्सी ऐब्लेशन

यह प्रक्रिया दर्द के साथ जुडी चुनिंदा नस के तंतुओ को नष्ट करती है। लिववेल हॉस्पिटल में हम बहुत ही नियमित तौर पर यह उपचार करते है। हमारे लिववेल हॉस्पिटल में विशेषज्ञ के हाथ कुछ ही मिनटों मे सभी प्रक्रिया करते हैं और मरीज दर्द से मुक्त हो जाते है। हम हर महीने बड़ी संख्या में कई रोगियों का इलाज करते हैं।

यह प्रक्रिया चमडी सुन्न करने के बाद की जा सकती है। रोगी के गाल पर इंजेक्शन देने के बाद, डॉक्टर रेडियो फ्रीक्वेन्सी सुई डालते है। सीटी स्कैन के लगातार मार्गदर्शन के नीचे डॉक्टर सुई को उचित दिशा में ले जाते है। एक बार सुई नस पर योग्य स्थिति में आ जाती है कि हम २ से ३ मिनट के लिए रेडियो फ्रीक्वेन्सी करंट देते है, जोकि ट्राइजेमिनल तंत्रिका के चुनिंदा संवेदी तंतुओं को बंद कर देता है। इस प्रक्रिया में लगभग ३० मिनट का समय लगेगा। आमतौर पर प्रक्रिया के बाद दर्द से राहत मिलती है। यह प्रक्रिया अन्य प्रमुख शल्य प्रक्रिया की तुलना में सुरक्षित है और शल्य चिकित्सा की तुलना में दर्द से अच्छी राहत देती है।

Scan for Video

कंधो का दर्द (शॉल्डर पेईन)

सरल शब्दो में कंधा जकड़ा जाता है। इसी को कंधे का दर्द कहा जाता है। कंधे में हलन-चलन वाले स्नायू में सूजन आने के कारण कंधा जकड़ा जाता है।

कंधो के दर्द के लक्षण:

- कंधे से हाथ उपर नहीं होना। • हाथ उपर करते वक्त कंधे में दर्द होना।
- हाथ पीछे कमर की तरफ नहीं होना। • रात को सोते समय कंधे में लपकारा होना। • बाल बनाने में भी तकलीफ होती है।

कंधो का दर्द का कारण:

ज्यादातर केस में कंधो के दर्द का कारण नहीं मिला है। इसके उपरांत कुछ लगने से यह रोग हो सकता है। डायाबिटीज़ मरीजों में यह रोग ज्यादा देखने को मिलता है।

कंधे (शोल्डर) के दर्द की जाँच: ऐक्स-रे, सोनोग्राफी, एम. आर. आई. जैसै टेस्ट द्वारा कंधे की जाँच की जाती है।

उपचार:

दवा एवं कसरत: शुरुआत में दर्द की दवाएँ एवं फिजियोथेरापी कसरत से उपचार किया जाता है।

मोबीलाईजेशन: कुछ वक्त मरीज़ को बेहोश करके कंधे को जोर से हिलाकर उपचार किया जाता है। इससे कंधे के स्नायू खुल जाते है एवं सामान्य मूवमेन्ट में आ जाते है।

पेन मेनेजमेन्ट द्वारा उपचार: पेन मेनेजमेंट में कंधा जकड़ा गया हो तो उसमें ऐक्स-रे मशीन में देखकर उसमें खास प्रकार का जेली का इंजेक्शन से सांधो के बीच घर्षण कम हो जाता है। इसके साथ जेल सांधो के बीच रहने से सूजन कम हो जाती है। एवं जोईन्ट की मूवमेन्ट को सरल बनाया जाता है। ज्यादातर केस में यह ट्रीटमेन्ट लेने से समस्या खत्म हो जाती है।

Scan for Video

गर्दन की नस दबने से भी यह समस्या हो सकती है। जिससे गर्दन में भी इंजेक्शन लगनें से गर्दन में दर्द की समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। जिसे सर्वाइकल इपीडुरल ब्लोक कहा जाता है।

ऑपरेशन से उपचार: कंधो के दर्द में बहुत कम केस में कंधे के जोईन्ट में दूरबीन डालकर ऑपरेशन से उपचार किया जाता है।

केंसर का दर्द: (Cancer Pain)

केंसर रोग हर स्टेज का मरीज़ दर्द से पीडित होता है। केन्सर के अलग-अलग प्रकार केंसर ट्रीटमेंट के साथ-साथ अलग अलग मरीज की दवाओं की जरुरत पड़ती है। दर्द की दवाओं से केंसर का दर्द काबू में ना आये तो इंटरनेशनल प्रोसीजर्स किये जा सकते है। लिववेल हॉस्पिटल में यह सब इन्टरनेशनल पेन प्रोसीजर्स का मुख्य उद्देश्य मरीज को आरामदायक - दर्द से मुक्त जीवन जी सकते है।

लिववेल हॉस्पिटल में केंसर के दर्द की सब प्रोसीजर्स की जाती है। यहाँ हम नियमित रुप से सब प्रोसीजर्स द्वारा केंसर के मरीज़ को दर्द से मुक्त जीवन जीने का प्रयत्न करते है।

मुख्यत: इन केन्सर रोग का दर्द की प्रोसीजर्स होती है।

- पेन्क्रीयाज केंसर
- गभार्शय केंसर
- पेट का केंसर
- मुंह एवं जबडे का केंसर
- लीवर केंसर
- आंत का केंसर
- छाती के भाग का केंसर

पेलीएटीव केर: इसके उपरांत अन्य प्रकार के दर्द में जिसमें ज्यादातर केंसर रोग का अन्तिम स्तर का केंसर का रोग शरीर के ज्यादा भाग में फैल गया हो तब मरीज को बहुत ज्यादा दर्द होता है। ऐसे समय में लिववेल हॉस्पिटल में मरीज को दर्द बंद हो ऐसी सब जरुरी दवाएँ दी जाती है। इस ट्रीटमेंन्ट को पेलीऐटीव के नाम से पहचाना जाता है।

Scan for Video

घुटनों का दर्द (नी पेन)

आज कल घुटनों का दर्द बहुत ज्यादा देखने को मिल रहा है। छोटी उम्र के लोगं में भी घुटनों में घिसाव होता है।

घुटन के घिसाव के लक्षण:

- घुटन के आसपास दर्द होना।
- चलते वक्त घुटन में दर्द होना।
- पेर सीघा करते वक्त घुटन में दर्द होना।

जाँच:

ज्यादातर केस में ऐक्स-रे द्वारा जाँच करके घुटन के घिंसाव का प्रकार तय किया जाता है। कुछ केसों में एम.आर.आई.की जरुरुत पडती है।

उपचार:

१) दवा एवं कसरत: शुरुआत में दवा एवं कसरत द्वारा उपचार किया जाता है।

२) पेन मेनेजमेंट द्वारा उपचार: घुटन की गद्दी में घिसाव हुआ हो या घुटन के जोड़ो की जेली सुख गई हो तो ऐसे केस में घुटनों में जेली का इंजेक्शन दिया जाता है।

घुटनों में जेली का इंजेक्शन देने से दोनों जोड़ो के बीच का घर्षण कम होता है और सूजन कम हो जाता है।
जरुरत हो तो फिर से जेली का इंजेक्शन लिया जा सकता है।

३) दूरबीन द्वारा उपचार:

घुटन के अंदर स्नायु (लिगामेन्टस) टूट गये हो ऐसे केस में घुटन में दूरबीन द्वारा उपचार किया जाता है। इसके लिये घुटन में दूरबीन डालकर ऑपरेशन द्वारा स्नायू को जोड़ दिये जाते है। या जरुरत पडने पर ऐसा उपचार किया जाता है।

४) घुटने बदलनें का ऑपरेशन: जब घुटन घिसाव ज्यादा हो ऐसे केस में लिववेल हॉस्पिटल के प्रख्यात डॉक्टरों द्वारा जॉईन्ट बदलने का ऑपरेशन किया जाता है।

Scan for Video

Testimonials

कांताबेन पटेल (घमासाणा, गांधीनगर)

मैं २-४ साल से घुटनों के दर्द से परेशान थी। सुबह से शाम तक पूरे दिन दर्द महसूस होता था। लिव वेल हॉस्पिटल में मैंने घुटने के मुख्य जोड़ का ऑपरेशन करवाया और अगले दिन से मैंने चलना शुरू कर दिया। घुटनों का दर्द दूर हो गया और वैरिकोज़ नसें दूर हो गईं। आज मैं करवट लेकर बैठ सकती हूं, उठने-बैठने में कोई दिक्क़त नहीं है।

प्रहलाद भाई पटेल (विसनगर)

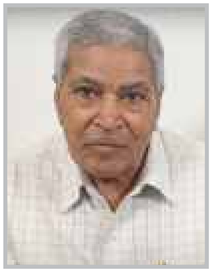

मुझे १० साल से मुँह में करंट के झटके महसूस होते थे । पानी के तरंगें जैसे मुँह के आगे के हिस्से में दर्द रहता था । मैं इतना परेशान था के मुझे आत्महत्या करने का ख़याल आने लगा । दर्द कभी भी होने लगता था, कभी रात में सोने के समय होता था , इतना कि में रो पड़ता था । बोल भी नहीं पाता था। कुछ समझ नहीं आता था । डॉ. हितेश पटेल के पास करंट के तरंगों का ऑपरेशन करवाया। कोई भी तकलीफ़ नहीं हुई । अब दर्द का नामोनिशान नहीं है । दोनों तरफ़ करवट लेके सो सकता हूं, ग़ुस्सा भी नहीं आता । कोई भी तरफ़ से खा सकता हूं । करंट के झटकों का जैसे दुख चला गया है ।

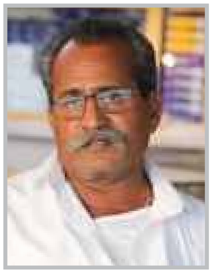

कालूराम प्रजापति, (बाड़मेर, राजस्थान)

मुझे २०१५ में गरदन के दर्द की तकलीफ थी। गरदन में मेरी नस दब रही थी। दर्द इतना ज्यादा था कि मैं १० से १५ मिनट से ज्यादा सो भी नहीं सकता था। कुछ काम भी नहीं कर सकता था। ४० दिनों तक मैं नहीं सो पाया। डॉ. हितेश पटेल द्वारा गरदन में इंजेक्शन देने के बाद एक दिन में ही आराम मिल गया। अब मैं हर काम कर सकता हूँ। मुझे अब कोई तकलीफ नहीं है।

Testimonials

डॉ. चंद्रेश आर. भट्ट, (मोरबी)

मेरी कमर में असहनीय दर्द था। चढ़ा तक नहीं जा सकता था, कमर से मुड़ गया था। कोई काम करना हो तो कुर्सी का सहारा लेना पड़ता था। लिव वेल हॉस्पिटल का पता चलने के बाद, डॉ. हितेश पटेल द्वारा कमर में सीमेंट डालवाया। अब मैं किसी भी सहारे के बिना चल सकता हूँ, अपनी हर प्रवृत्ति को कर सकता हूँ। सीढ़ियाँ भी चढ़ सकता हूँ। अब जीवन का आनंद आ रहा है।

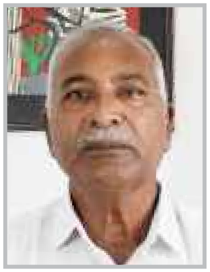

हसमुखभाई (कच्छ, भुज)

दो तीन महीनों से मेरे घुटने में काफ़ी दर्द हो रहा था। घुटने में दर्द होने के कारण सुबह न उठा जा सकता था, न चला जा सकता था। जंगल अधिकारी रहने के कारण फ़ील्ड पर ज़्यादातर काम रहता था। लिव वेल हॉस्पिटल, डॉ. हितेश पटेल द्वारा घुटने में जेल के इंजेक्शन दिए गए। घुटने के इंजेक्शन के बाद अच्छे से चल सकता हूँ। अब में व्यायाम कर रहा हूँ और अपने फ़ील्ड काम में काम कर सकता हूं, नीचे पैर जोड़कर भी बैठ सकता हूं, अब खाने बैठने के लिए पैर मोड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हर्षदभाई पटेल (डरन, कड़ी)

पिछले २ साल से मुझे साइटिका की तकलीफ थी ।कमर से लेकर पैर की उंगलियों तक लगातार दर्द रहता था और नसें खिंची रहती थीं, इस प्रकार का दर्द था, जब मैं गिरता तो मेरे पैरों में झनझनाहट होती। में खेतमे काम भी नहीं कर सकता था और दर्द के कारण मुझे नींद भी नहीं आ रही थी। लिव वेल हॉस्पिटल में, डॉ. हितेश पटेल द्वारा मेरी कमर की हर्निया का दूरबीन से ऑपरेशन किया गया ।इसके बाद मैं खेती का काम भी कर सकता हूँ। अब कोई भी पैर भारी नहीं हो सकता। मैं पैर मोड़ सकता हूं, पलट सकता हूँ, में उठ कर बैठ भी सकता हूँ।

शर्मिष्ठाबेन पंचाल (संतरामपुर, महिसागर)

मैं कमर दर्द से बेहद पीड़ित थी। पैरों में लगातार झनझनाहटी रहती थी। चलना, खड़ा होना, बैठना, लेटना, कुछ नहीं कर सकती थी। मैं अपना रोज़ का काम भी नहीं कर पाती थी। वर्ष २०१७ में जब मुझे लिव वेल हॉस्पिटल के बारे में पता चला तो मुख्य कमर में मैंने एक इंजेक्शन लगवाया था। २०२३ में भी मैं अपनी सभी प्रवृत्तियों को सामान्य रूप से कर सकती हूँ। खड़े होने और चलने में अब कोई परेशानी नहीं होती।

Testimonials

उषाबेन शाह (सूरत)

मुझे २ महीने से कमर से लेकर पैर तक दर्द हो रहा था। धीरे-धीरे दर्द इतना बढ़ गया कि ब्रश करने के लिए भी कमर से करवट लेनी पड़ती थी। न सो सकते थे, न बैठ सकते थे, यहां तक कि चलना भी बंद हो गया था। कई दवाइयाँ लेने के बावजूद सुधार नहीं हुआ। डॉ. हितेश पटेल द्वारा स्क्रू प्लेट से ऑपरेशन किया गया। मैं ज्यादा डर गई थी। लेकिन ऑपरेशन के बाद मुझे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ. मैं बैठ और चल नहीं सकती थी, अब मैं सामान्य रूप से चल सकती हूं, मैं सभी काम सामान्य रूप से कर सकती हूं। दर्द निवारक दवा और इंजेक्शन मुझे पहले बहुत लेने पड़ते थे, मुझे अब किसी इंजेक्शन या दवा की आवश्यकता नहीं है। धन्यवाद डॉ. हितेश पटेल जिन्होंने बिना किसी टांके के मेरा ऑपरेशन किया और मुझे आराम से चलने-फिरने में मदद की।

सोनलबेन पटेल (शिलज, अहमदाबाद)

मुझे ५-६ महीने से कंधे में दर्द हो रहा था। उठना भी मुश्किल था। कंधे में दर्द के कारण झुनझुनी भी हो रही थी। घर में या मेरे अपने दैनिक कार्य में भी समस्या थी। डॉ. हितेश पटेल द्वारा कंधे में इंजेक्शन से इलाज किया गया। २०२१ में कंधे में इंजेक्शन लगा था। २०२३ तक मुझे कभी महसूस नहीं हुआ कि कंधे में कोई दर्द है। अब मैं अपना सारा काम, घर का काम कर सकती हूं। अब कोई परेशानी नहीं है, न सोने-उठने में कोई दिक्कत।

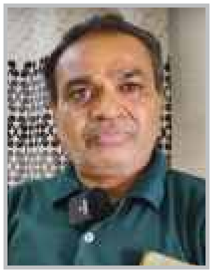

अल्पेश भाई पटेल (अडालज, अहमदाबाद)

मुझे गर्दन के बाजू के हिस्से में दर्द रहता था । दर्द के कारण में घूम फिर नहीं पाता था, खा नहीं सकता था, कुछ काम नहीं कर सकता था। पूरे दिन भर गर्दन से लेके हाथ तक दर्द रहता था । गर्दन के दर्द के कारण मैं १५-२० दिन तक ठीक से सो भी नहीं सका। थोड़ा लखवा भी मार गया था । लिव्वेल हॉस्पिटल में डॉ. हितेश के पास मैंने ऑपरेशन करवाया। आज २ साल हो गये, मुझे कुछ भी तकलीफ़ नहीं होती है । में वज़न भी उठा सकता हूँ, घूम फिर सकता हूँ । कुछ भी तकलीफ़ नहीं होती, आराम से सारे काम कर सकता हूँ ।